बुराई (हानि से न डरें)

परमेश्वर के लिये पवित्रता

मैं अपने इस विषय और बातचीत का आरम्भ आप से एक प्रश्न को पूछने के द्व ारा करना चाहता हूठ। क्या आप वास्तव में खुश हैं, या आप चिन्ता और भय के लिए आत्मिक बन्धन में हैं? आप जानते हैं कि बहुत से ऐसे लोग हैं, जो यह बताना चाहते हैं कि वे खुश हैं, परन्तु प्रभु का एक सेवक होने के कारण, मैंने यह पाया कि बहुत से लोग वास्तव में खुश नहीं हैं। इस बात से ही मैं अति प्रभावित हुआ कि जीवन की वास्तविक्ता का वर्णन करुठ। बाईबल के एक महान लेखक के द्वारा हमें यह बताया गया हैं, कि मसीह जो हमारा जीवन है, जब वह प्रकट होता है, तब हम उस समय वास्तविक रीति से खुश रहने की बात को अनुभव करना आरम्भ कर सकते हैं।

इस जगत में मनुष्य का जन्म मृत्यु के लिए होता हैं। इस जगत में वे एक अभिप्राय के लिए आते है, और वह अभिप्राय मरना हैं। पवित्रशास्त्र में पौलुस ने कहा है कि, हमारा सम्पूर्ण जीवन मृत्यु के भय के कारण दासत्व के अधीन है, पर क्या आप इस बात को जानते है, कि जब परमेश्वर के राज्य में किसी का जन्म होता है, तो उसका जन्म अनन्त जीवन के लिए होता है, ताकि वह एक वास्तविक स्थान में रह सके। उसे मृत्यु का भय नहीं होता, क्योंकि वह मृत्यु से पार होकर जीवन में प्रवेश कर चुका है। परमेश्वर चाहता है कि मनुष्य ऐसे स्वस्थ जीवन को प्राप्त करें जो भय से प्रभावित नहीं होता। उसने अपने वचन में कहा है कि हमें अपने हृदय को व्याकुल नहीं होने देना चाहिये।

आईये, हम इस बात को निश्चित रीति से जान ले कि हमारे पास एक ऐसी सामर्थ है, कि हम अपने हृदयों को व्याकुल होने से सुरक्षित रख सकते हैं। जिस कार्य को हम स्वयं कर सकते हैं, उसके लिए हमें परमेश्वर से कहने की आवश्यकता नहीं कि वह हमारे लिए कुछ करें, पर इसके बदले हमें, सामर्थ प्राप्त करने के लिए प्रार्थना करना चाहिये ताकि उस कार्य को हम स्वयं कर सकें जिसे करने की योग्यता परमेश्वर ने हमें दी हैं। अपने हृदयों को व्याकुल करने वाले भय और जीवन की घबराहटों से सुरक्षित रखने का उपाय यह है कि हमारे प्रति परमेश्वर के प्रेम और सम्बन्ध की प्रतिज्ञाओं में

विश्वास रखना है, और अपने सम्पूर्ण हृदय से उसमें विश्वास रखते हुए उसमें सम्पूण
ा भरोसा रखना हैं।

दाज्द ने कहा कि मैं बुराई ;हानिद्ध से न डरूंगा। प्रभु यीशु ने अपने वचन में हम से कहा है कि हम अपने हृदय को भयभीत न होने दें। परमेश्वर ने हमें भय की आत्मा नहीं दी। भय उत्पन्न करनेवाला शैतान हैं। हमें निर्धनता से नहीं डरना चाहिये, क्योंकि निर्धनता एक बुराई है, और इस से डरने का कारण परमेश्वर के वचन में हमारे विश्वास की कमी है, क्योंकि उसने हमारे लिए उत्तम आशिषों की प्रतिज्ञा की है, ताकि हम उन्नति करें और स्वस्थ रहें, जैसा कि हमारी आत्मा भी उन्नति करती हैं।

अविश्वास करना परमेश्वर को अप्रसन्न करना है। जो विश्वास से नहीं वह पाप है, क्योंकि हम विश्वास के द्वारा पवित्र किये गए है या अनुग्रह के द्वारा विश्वास से हमारा उद्धार हुआ हैं। रोग से डरने का अर्थ परमेश्वर के वचन में अविश्वास करना है, क्योंकि पवित्रशास्त्र में हमसे ऐसा कहा गया है कि, मैं तेरा परमेश्वर हूठ, जो तेरे सारे अधर्म को क्षमा करता और सारे रोगों से तुम्हे चंगाई देता हूठ। इस बात पर ध्यान दें, कि हम पाप से गिरने या पाप से डरने के लिए उत्पन्न नहीं हुए हैं। हमसे कहा जा चुका है कि परमेश्वर ने हमें चंगाई दे दी है ताकि हम पाप में न गिरे, और यह कि परमेश्वर के

प्रेम से हमें कोई भी बात अलग नहीं कर सकती। यहाठ तक कि हमें इस बात से अलग करने के लिए शैतान के पास शक्ति भी नहीं हैं। आप केवल अपनी ही लालसाओं के कारण भटक कर परमेश्वर को छोड़ सकते हैं। आप ऐसा इसलिए कर सकते है क्योंकि लालसाओं में पड़ने और पाप में गिराने के लिए शैतान आपकी परीक्षा करता है, बाईबल के अनुसार ऐसी घटना इस बात को प्रमाणित करती हैं, कि आप ने परमेश्वर को न तो कभी देखा या न तो कभी उसे जाना। इसलिए, हम केवल परमेश्वर में अनन्त सुरक्षा देख सकते हैं। जब पुराना मनुष्य मर जाता है तब आप इस जगत और इस में की सभी बातों के प्रति अपने प्रेम या मोह को खो देते हैं, और नया मनुष्य जिसने मसीह को पहन लिया है वह स्वर्गीय वस्तुओं से प्रेम रखेगा। उसकी बातचीत पवित्र होगी, क्योंकि वह एक नया प्राणी या नई सृष्टि हैं। बाईबल कहती है, कि देखो, पुरानी बातें समाप्त हो गई, और सब नई हो गई हैं।

राजा दाज्द ने कहा, मैं ने प्रभु को पुकारा और उसने मेरी सुन ली, और उसने मुझे भय से मुक्त कर दिया। क्यों आप शैतान को अपने मन और हृदय में भय, व्याकुलता

और संदेह करने का विचार उत्पन्न आने दें, जिनके द्वारा वह आपके विश्वास को दुर्बल करता हैं? आपके विचारों के नियंत्रण से बाहर क्या वह आप पर दबाव दे सकता हैं, परमेश्वर ने कहा है, कि वह आपको आपकी सामर्थ से बाहर परीक्षा में न पड़ने देगा, वरन परीक्षा के साथ विकास भी करेगा ताकि आप इसे सहने के योग्य हो सकें। प्रभु हमसे कहता है कि हम अपनी सभी कल्पनाओं को त्याग दें, और प्रत्येक विचार को विश्वास के अधिन कर दें, और परमेश्वर के वचन में विश्वास रखें।

आप अपनी भावनाओं और अपने विचारों का इंकार करें। आपका कहना और सोचना परमेश्वर के वचन के अनुसार हो। वचन से प्रेम रखें। इसके विषय में बातचीत करें। वचन के लिए अपने हृदय में लालसा उत्पन्न होने दें, और जब आप मसीह यीशु पर अपने मन को लगाऐंगे या स्थिर करेंगे, तो आपको पूर्ण शान्ति प्राप्त होगी। परमेश्वर ने कहा है, कि उसके वचन में विश्वास के द्वारा हम पवित्र किये गए हैं, इसलिए प्रभु यीशु ने कहा, कि डरो मत।

यदि आप किसी भी प्रकार की विपरीत शक्तियों से भय खाते हैं, तो इसका अर्थ यह हुआ कि आप उन शक्तियों के अधीन या वश में हो गए हैं, और इस रीति से वे आप के ज्पर, अधिकारी हो जाते हैं, और जब वे आपको अपना गुलाम बना लेते है तो आप उनके दास हो जाते हैं।

By George L. Pike

यह संदेश मुफ्त बाटने के लिए तैयार किया गया हैं। अधिक किताब के लिए सम्भव हो तो नीचे लिखे गये पते पर इंग्लिश में लिखें, कि कितना आप इस्तेमाल करना चाहते हैं।

HIN9907T • HINDI • FEAR NO EVIL

Jesus Christ's Abundant Life Publications, Inc.
PO Box 986 • Monroe, GA 30655-0986 USA
Web: www.jceal.org • Email: info@jceal.org